रस सिद्धान्त (Contd.)

⑨ शान्त रस -

'निर्वेद स्थायि भावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः॥'

(मम्मट:)

निर्वेद का यदि स्थायी भाव स्वीकार कर लिया जाय तो शान्त रस को नवम रस कहा जाएगा। मम्मट ने व्यभिचारी भावों में निर्वेद को प्रथम स्थान दिया है, क्योंकि यह स्थायीभाव के रूप में स्वीकार किया गया है।

यथा - अहौ वा हारे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा।
मणौ वा लोष्ठे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्तु दिवसाः
क्वचित् पुण्येऽरण्ये शिव! शिव! शिवेति
प्रलपतः॥ (वैराग्य शतक)

अर्थात् "सर्प हो या पुष्पमाला, फूलों की सेज हो या शिलाखण्ड, मणि हो या मिट्टी का टुकड़ा, बलवान् शत्रु हो या मित्र, घास का ढेर हो या स्त्रियों का समूह - इन सब में समबुद्धि रहकर किसी पुण्यक्षेत्र में रहते हुए, "हे शिव! हे शम्भो!" ऐसा असम्बद्ध क्रम रहित उच्चारण करते हुए मेरे दिन बीते।"

यहाँ सर्पादि आलम्बन, पुण्याश्रमादि उद्दीपन, तुच्छ दर्शनादि अनुभाव तथा रोमाञ्चादि व्यभिचारी भाव हैं, इनसे पुष्ट होकर पूर्वोक्त निर्वेद स्थायीभाव आस्वादभूमि में आकर शान्तरस का स्वरूप धारण करता है।

Scanned with CamScanner

(10) वात्सल्य रस –

'केचिच्चमत्कारिता वत्सलञ्च रसं विदुः।'

(विश्वनाथ – साहित्यदर्पण)

कुछ लोग चमत्कारपूर्ण होने के कारण वत्सल रस नामक दसवाँ रस भी मानते हैं। काव्यदीपिका के रचयिता श्री भट्टाचार्य भी इसे स्वीकार करते से प्रतीत होते हैं।

यथा – यदाह धात्र्या प्रथमोदितं वचो
ययौ तदीयामवलम्ब्य ~~चाङ्गुलिं~~ चाङ्गुलिम्।
अभूच्च नम्रः प्रणिपातशिक्षया
पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः॥

(रघुवंश – कालिदास)

अर्थात् "बालक रघु, धाय द्वारा पहले कहे हुए वचनों को जैसे बोलता था, उसकी अँगुली पकड़कर जैसे चलता था, इसके द्वारा प्रणाम करने की सीखाकर जैसे नम्र होता था, इन सब से वह अपने पिता दिलीप का आनन्द बढ़ाता था।"

यहाँ 'रघु' आलम्बन, उसकी चेष्टा उद्दीपन, चुम्बनादि अनुभाव तथा जवादि व्यभिचारियों की सहायता से वात्सल्य स्थायीभाव वात्सल्य रस के रूप में परिणत होता है।

Uma Pandey
Deptt. of Skt.
B.A. III Yr. (Contin.)

Scanned with CamScanner